सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 07.07.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, बर्तानियः।

बदर की लड़ाई के वृत्तांत व घटनाओं का बयान।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 07.07.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, बर्तानियः।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले ख़ुत्बः में मक्का के काफ़िरों पर मुसलमानों के रौब के बारे में अबू जहल और उतबा के युद्ध करने क विषय में मतभेद का वर्णन हुआ था, फिर अबू जहल की धिक्कार के कारण उतबा ने युद्ध की घोषणा भी कर दी तथा यूँ नियमबद्ध रूप से युद्ध आरम्भ हुआ।

उतबा बिन रबीअः अपने भाई शैबा बिन रबीअः तथा अपने बेटे वलीद बिन उतबा के बीच में होकर चलता हुआ निकला तथा सना को पंक्तियों से आगे निकल कर युद्ध के लिए पुकारा। हज़रत अली रज़ीयल्लाहु अन्हु कहते हैं कि इस पर अन्सार के कुछ युवाओं के उतबा को उत्तर देने पर उसने पूछा कि तुम कौन हो? उनके बताने पर उसने कहा कि हमारा तुमसे कोई लेना देना नहीं, हमारा इरादा तो केवल अपने चाचा के बेटों से लड़ने का है और साथ ही बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहा- ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमारे रिशतेदारों में से हमारे बराबर के लोगों को मुक़ाबले पर भेजो। तो नबी स. ने फ़रमाया- उठो ऐ हमज़ा! उठो ऐ अली! उठो ऐ उबैदा बिन हारिस! (पहले दो आप स. के चचा तथा बाद के दोनों आप स. के चचेरे थे)। हमज़ा उतबा की ओर बढ़े, हज़रत अली रज़ी. कहते हैं- मैं शैबा की ओर बढ़ा तथा उबैदा और वलीद में दो झड़पों का आदान प्रदान हुआ, तथा दोनों में से हर एक ने एक दूसरे को ज़ख़्मी करके कमज़ोर कर दिया। फिर हम वलीद की ओर गए और उसको मार डाला और उबैदा को हम उठाकर लाए। हज़रत हमज़ा रज़ी. और हज़रत अली रज़ी. ने अपने दुश्मनों को मार दिया।

हज़रत हमज़ा रज़ी. और हज़रत अली रज़ी. अपने साथी उबैदा बिन हारिस को अपनी सेना में उठा लाए तो उनका पाँव कट चुका था। जब उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश

किया गया तो उन्होंने निवेदन पूर्वक कहा- या रसूलुल्लाह! क्या मैं शहीद नहीं हूँ? आप स. ने फ़रमाया- निःसन्देह तुम शहीद हो। उबैदा बिन हारिस रज़ी. इन घावों से उबर न सके तथा बदर से वापसी पर रास्ते में मृत्यु हो गई।

जब दोनों सेनाएँ आपस में मिल गईं अर्थात घोर संग्राम होने लगा तो अबू जहल ने दुआ की, कि ऐ ख़ुदा! हममें से जो व्यक्ति निकटवर्ती रिशतेदारियों को तोड़ता और ऐसी बातें बयान करता है जो हमने पहले कभी नहीं सुनीं, तू आज उसका विनाश कर दे।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं- मालूम होता है अबू जहल को यही यक़ीन था कि गोया नऊज़ुबिल्लाह! आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन पवित्र और पाक नहीं, तभी तो उसने दर्दे दिल से दुआ की लेकिन इस दुआ के बाद शायद एक घन्टा भी जीवित न रह सका और ख़ुदा के प्रकोप ने उसी स्थान पर उसका सिर काट कर फेंक दिया और जिनकी पाक ज़िन्दगी पर वह दाग़ लगाता था वे इस मैदान से विजय एवं सफलता पूर्वक वापस आए।

मुसलमानों के सामने उनसे तीन गुना बडो जमाअत जो हर प्रकार के युद्ध के साधनों से सुसज्जित होकर इस संकल्प के साथ मैदान में निकली थी कि इस्लाम का नामो निशान मिटा दिया जावे। मुसलमान अपनी संख्या के अनुसार थोड़े थे। किन्तु ज़िन्दा ईमान ने उनके अन्दर एक चमत्कारी शक्ति भर दी थी। हज़रत उमर रज़ी. बिन ख़त्ताब के द्वारा स्वतंत्र किए हुए सेवक हज़रत महजह रज़ी. को एक तीर का निशाना बनाया गया जिससे वे शहीद हो गए। ये मुसलमानों में से पहले व्यक्ति थे जिनको शहादत का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आँहुज़ूर स. ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति आज के दिन धैर्य के साथ सवाब समझ कर युद्ध करेगा और पीठ फेर कर न भागेगा, ख़ुदा उसको जन्नत में दाख़िल करेगा। यह सुनकर उमैर बिन हमाम रज़ी. ने जो बनी सलमा में से थे (उस समय उनके हाथ में कुछ खजूरें भी थीं, जो वे खा रहे थे) कहा- वाह, वहा, मेरे तथा जन्नत के बीच बस इतना ही समय रह गया है कि ये लोग मेरी हत्या कर दें, और फिर अपनी तलवार पकड़ कर इतना लड़े कि शहीद हो गए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अफ़रा के बेटे औफ़ बिन हारिस ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया- या रसूलुल्लाह स! अल्लाह तआला अपने बन्दे की किस बात से ख़ुश होता है? फ़रमाया- दुश्मन को युद्ध के लिबास व कवच इत्यादि से वंचित रह कर वध करने से, इस पर उन्होंने अपना युद्ध कवच उतार कर फेंक दिया तथा अनेक काफ़िरों का वध करने के बाद स्वयं भी शहीद हो गए।

युद्ध की समाप्ति पर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृतकों के बीच खड़े हुए और अबू जहल को ढूंडना शुरु किया। आप स. ने उसको न पाया तो यह दुआ की- اَللّٰهُمَّ لَا تُعْجِزْنِيْ فِرْعَوْنَ هٰذِهِ الْاُمَّةِ ऐ अल्लाह, तू मुझे इस उम्मत के फ़िरऔन के मुक़ाबले पर विवश न कर देना। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ी. ने अबू जहल को आँहुज़ूर स. के आदेशानुसार घुटने के घाव की निशानी से पहचान कर ज़ख़्मी अवस्था में ढूंड लिया। उसमें कुछ जीवन के संकेत शेष थे, आप रज़ी. के पूछने पर अपनी इस

इच्छा को व्यक्त किया कि मेरी गर्दन तनिक लम्बी करके काट दो। उन्होंने कहा कि मैं तेरी इस इच्छा को भी पूरी नहीं होने दूँगा और गर्दन को ठोड़ी के पास से काट कर हुज़ूर स. की सेवा में लाकर आप स. के पाँव में डाल दिया तो आप स. ने अल्लाह तआला का आभार प्रकट किया और फ़रमाया- اَللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ غَیْرُهٗ अल्लाह ही वह पवित्र अस्तित्व है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। एक रिवायत में है कि आप स. ने यह दुआ भी मांगी कि ऐ ख़ुदा, ऐसा न हो कि वह तेरी पकड़ से निकल जाए। हज़रत क़तादा रज़ी. से रिवायत है- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- हर उम्मत का फ़िरऔन होता है, इस उम्मत का फ़िरऔन अबू जहल है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- अबू जहल को फ़िरऔन कहा गया है, किन्तु मेरी दृष्टि में तो वह फ़िरऔन से भी बढ़ कर है। फ़िरऔन ने तो अन्त में कहा- قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِیْلَ कि मैं ईमान लाता हूँ कि कोई पूज्य नहीं किन्तु वह जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए हैं। परन्तु यह अन्त तक ईमान न लाया, मक्का में सारा फ़साद इसी का था और बड़ा अहंकारी एवं आत्मगर्वित तथा प्रतिष्ठा और मान सम्मान का चाहने वाला था।

हज़रत इमाम राज़ी रहमुल्लाह सूरः अनफ़ाल की आयत- وَمَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰی की व्याख्या बयान करते हुए लिखते हैं कि जब क़ुरैश ने चढ़ाई की तो रसूलुल्लाह स. ने दुआ की, कि ऐ अल्लाह! यह क़ुरैश क़बीला अपने घोड़ों तथा गर्व के साधनों के साथ इस अवस्था में आया है कि वह तेरे रसूल को झुठला रहे हैं। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे वही चीज़ मांगता हूँ जिसका तू ने मुझसे वादा किया है तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम नाज़िल हुए और कहा- या रसूलुल्लाह स! मुट्ठी भर मिट्टी लें और इन काफ़िरों की ओर फेंक दें, तो फिर जब दोनों सेनाओं की आपस में मुठभेड़ हुई तो आप स. ने मुट्ठी भर मिट्टी काफ़िरों के चेहरों की ओर फेंक दी, तो मुशरिक अपनी आँखें मसलने लगे जिसके परिणाम स्वरूप वे पराजित हो गए। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَمَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰی अर्थात कंकरियों से भरी हुई मुट्ठी जिसे आप स. ने फेंका, वास्तव में आप स. ने उसे नहीं फेंकी थी, क्यूँकि आप स. का फेंकना इतना ही प्रभाव शाली हो सकता है जितना एक मनुष्य प्रभाव शाली हो सकता है बल्कि अल्लाह ने उसे फेंका है जिसके परिणाम में इस मिट्टी के कण उनकी आँखों तक पहुंच गए, तो यह फेंकने की स्थिति तो नबी करीम स. द्वारा हुई किन्तु इसका प्रभाव अल्लाह तआला की ओर से घटित हुआ।

हज़रत जिब्रईल अलै. आप स. के पास आए और कहा आप स. मुसलमानों में बदर के युद्ध वालों को क्या स्तर देते हैं? आप स. ने फ़रमाया- सबसे उत्तम मुसलमान अथवा ऐसा ही कोई शब्द फ़रमाया। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने कहा इस तरह वे फ़रिश्ते भी सर्वोत्तम हैं जो बदर की लड़ाई में शामिल हुए।

कुछ लोगों का विचार है कि फ़रिश्तों का नाज़िल होना केवल मोमिनों के लिए शुभ संकेत तथा दिल को संतुष्टि के लिए था, अन्यथा फ़रिश्ते युद्ध में क्रियात्मक रूप से शामिल नहीं हुए। हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इस विचार को सही हदीसों के विरुद्ध कहा तथा फ़रमाया- परन्तु यहाँ यह प्रश्न उठता है कि सहायता के लिए तो एक ही फ़रिश्ता काफ़ी था, तो हज़ारां फ़रिश्ते क्यूँ नाज़िल हुए। इमाम

इब्ने लिखते हैं कि अल्लाह की ओर स फ़रिश्तों का नाज़िल होना तथा मुसलमानों का इसकी सूचना मिलना शुभसूचक के रूप में थी, अन्यथा अल्लाह इसके बिना भी अपने दुश्मनों के विरुद्ध मुसलमानों की सहायता कर सकता है।

जब युद्ध पण रूप स शुरु हुआ तो थोड़ी देर बाद मुशरिकों की सेना में असफलता एवं निराशा के संकेत प्रकट हो गए। उनकी सेना की पंक्तियाँ मुसलमानों के ताबड़ तोड़ हमलों से तितर बितर हो गईं, उनमें भगदड़ मच गई। मुसलमानों ने उनका पीछा किया तथा उन्हें घोर पराजित किया।

यह अभियान मुशरिकों को पराज्य तथा मुसलमानों की स्पष्ट विजय पर पूरा हुआ और इसमें चौदह मुसलमानों (छः महाजिर और आठ अन्सार) ने शहादत का सौभाग्य प्राप्त किया परन्तु मुशरिकों को घोर हानि उठानी पड़ी, उनके सत्तर आदमी मारे गए तथा सत्तर बन्दी बनाए गए जो सामान्यतः मुख्या, सरदार तथा बड़े बड़े प्रतिष्ठित लोग थे।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- कुछ दुआओं की ओर भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ। फ़लिस्तीन के मुसलमानों के लिए भी दुआ करें कि उनको ऐसा मार्ग दर्शन मिले जो उनका हक़ अदा करने वाले मुसलमान यदि एक हो जाएँ तो इस कठिनाईयों से निकल सकते हैं।

इसी तरह स्वीडन में तथा कुछ अन्य देशों में भी जो विचारों की स्वतंत्रता तथा धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर ग़लत काम करने वालों को खुली छूट मिली हुई ह और इस बहाने से जो मुसलमानों की भावनाओं से खेल कर आएदिन कुछ न कुछ ऐसी हरकतें करते हैं जो मुसलमानों की भावनाओं को कष्ट देने वाली हैं, अल्लाह तआला ही इनकी पकड़ के सामान फ़रमाए।

फिर फ्रांस में जो हालात हैं, यहाँ भी मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है तथा मुसलमानों की प्रतिक्रिया भी अनुचित है। मुसलमानों को अपने व्यवहार इस्लाम की शिक्षा क अनुसार करने होंगे। जब मुसलमानों की कथनी करनी इस्लाम की शिक्षा के अनुकूल होगी तो तब ही सफ़लताएँ भी मिलेंगी। मैं कई बार कह चुका हूँ कि दुनिया महा विनाश की ओर जा रही है, अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

इसी प्रकार पाकिस्तान में जो अहमदी हैं उनके लिए भी बहुत दुआएँ करें, अल्लाह तआला उन्हें भी हर एक उपद्रव से सुरक्षित रखे, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رحمكم الله اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131